डॉ. अश्वनी कुमार, महानिदेशक, *भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद,* देहरादून द्वारा हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला का दौरा
(11.01.2015 to 13.01.2015)

डॉ. अश्वनी कुमार, भा.व.से., महानिदेशक, *भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद,* देहरादून ने **दिनांक 11 से 13 जनवरी 2014 तक** हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, हिमाचल प्रदेश का दौरा किया। उपरोक्त यात्रा के दौरान, डॉ अश्वनी कुमार ने संस्थान द्वारा हिमाचल प्रदेश और जम्मू और कश्मीर राज्यों में वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में किए जा रहे काया की विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

सबसे पहले **डॉ. वी. पी. तिवारी, निदेशक,** हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने डॉ अश्वनी कुमार का हिमाचली परंपरा से स्वागत किया तथा संस्थान में चल रही विभिन्न गतिविधियों से अवगत करवाया। डॉ. तिवारी ने बताया की हालाकि हिमालयन वन अनुसंधान, शिमला, परिषद का एक छोटा संस्थान है, परन्तु फिर भी यह संस्थान हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू एवं कश्मीर राज्यों में सिमित संसाधनों के बावजूद वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में महत्तवपूर्ण कार्य कर रहा है। संस्थान के वैज्ञानिकों ने अपने अनुसंधान कार्यो के माध्यम से हिमालयी क्षेत्र के पर्यावरण एवं पारिस्थिति के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

इसके बाद **डॉ. कुलराज सिंह कपूर, वैज्ञानिक–जी एवं समूह समन्वयक अनुसंधान** नें संस्थान के बारे में पॉवरपॉइंट प्रस्तुति के माध्यम से संस्थान द्वारा अर्जित महत्वपूर्ण उपलब्धियों एवं वर्तमान में संस्थान दवारा चलाई जा रही अनुसंधान परियोजनाओं एवं विस्तार सम्बन्धी उपलब्धियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

संस्थान की प्रस्तुति के पश्चात अपने संबोधन में **महानिदेशक महोदय** ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला दवारा किये जा रहे कार्यो की प्रशंसा करते हुए कहा कि मुझे यह जानकर अति प्रसंन्नता हो रही है कि इस संस्थान द्वारा हितधारकों, विशेषकर, दोनों राज्यों के वन विभागों के साथ अच्छा सामंजस्य बिठाकर महत्तवपूर्ण अनुसंधान परियोजनाएं चलाई जा रही है। उन्होंने संस्थान को आश्वस्त किया कि संस्थान द्वारा जनहित/हितधारको के हित में शुरू की गई वानिकी अनुसंधान परियोजनाओं के संचालन में धन की कमी नहीं आने दी जाएगी तथा

परिषद द्वारा समय–समय पर आवश्यक बजट उपलब्ध करवाया जायेगा। अपने संबोधन में डॉ. अश्वनी कुमार ने संस्थान के वैज्ञानिकों को सुझाव दिया कि भविष्य में वो जो भी अनुसंधान परियोजनाएं बनाई जाये वे केवल अपने शैक्षणिक महत्व की न हो अपितु अनुसंधान परियोजनाएं जन–आकाक्षाओं को ध्यान में रख कर बनाई जानी चाहिए ताकि वानिकी अनुसंधान के परिणामों से आम–जनता तथा हितधारकों को इसका सीधा लाभ मिल सकें। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में लोगा को ऐस कार्य करने चाहिए जिनसे उन्हें तुरंत लाभ मिलना आरम्भ हो। हालॉकि वानिकी के क्षेत्र में ऐसा सदैव ही सभंव नहीं है परन्तु फिर भी इस दिशा में हम एक नई शुरूआत कर सकते है। इस बारे उन्होंने बताया कि औषधीय पौधों की खेती करने हेतु हमारे वैज्ञानिक विभिन्न तकनोकों का आविष्कार कर रहे है जिस से किसानों की आय में भी बढ़ोतरी हो रही है तथा दूसरी और पर्यावरण का संरक्षण भी संभव हो रहा है।

उन्होनें सुझाव दिया कि अनुसंधानों के परिणामों को हितधारकों तक पहुॅचाने हेतु परिषद नें उपभोक्ताओं के लिए प्रत्यक्ष योजना (***Direct to Consumers***) तथा वन–विज्ञान केन्द्रों को देश के विभिन्न भागों में स्थापित किया है जिस के माध्यम से परिषद् द्वारा वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में किय जा रहे कार्यो से हितधारकों को अवगत करवाया जा रहा है तथा इसके साथ–साथ विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन भी परिषद तथा इसके संस्थानों द्वारा समय–समय पर करवाया जाता है। डॉ. अश्वनी कुमार ने बताया कि हिमालय क्षेत्र जैव–विविधता के आकर्षण का केन्द्र है तथा साथ–साथ ही यह पानी का भी एक विशेष स्त्रोत है जिस पर पूरा देश निर्भर है इसलिए हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान का महत्व और भी बढ़ जाता है तथा हमें इन स्त्रोतों के सरंक्षण हेतु अपना महत्तवपूर्ण योगदान देना है। उन्होंने संस्थान के वज्ञानिकों को *मिकोरहिज्जा* (*Mycorrhizaa*), ब्रन्स (Rhododendron), जंगली अखरोट (Walnuts), रोबिनिया, चिलगोजा (Pinus gerardiana), एसर (Acer), भोजपत्र (Betula) आदि प्रजातियों पर भी अनुसंधान कार्य करने की सलाह दी।

उन्होनें संस्थान के हर्बरियम (सूखी वनस्पतियों का संग्रह), प्रयोगशालाओं का अवलोकन कर वैज्ञानिकों से उनके द्वारा किये जा रह कार्यो की विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

महानिदेशक महोदय विभिन्न अनुसंधान प्रयोगशालाओं का अवलोकन करते हुए

इसके पश्चात, डॉ. अश्वनी कुमार, महानिदेशक ने संस्थान द्वारा नव–निर्मित पुस्तकालय भवन का लोकार्पण भी किया तथा बताया कि संस्थान के वैज्ञानिक तथा आस–पास के क्षेत्रों से वानिकी के क्षेत्र में कार्य कर रहे अनुसंधानकर्ताओं को इस पुस्तकालय से सीधा लाभ मिलेगा। वर्तमान में पुस्तकालय में वानिकी से सम्बधित लगभग 3300 किताब, 700 पत्र–पत्रिकाएं, 120 नक्शें तथा 12 थीसिस उपलब्ध है तथा भविष्य में इस पुस्तकालय को ओर अधिक विस्तार दिया जायेगा तथा वानिकी से सम्बधित ई–जर्नल्स भी उपलब्ध करवांए जायेंगें।

इसके पश्चात, डॉ. अश्वनी कुमार, महानिदेशक ने संस्थान द्वारा नव–निर्मित पुस्तकालय भवन का लोकार्पण भी किया तथा बताया कि संस्थान के वैज्ञानिक तथा आस–पास के क्षेत्रों से वानिकी के क्षेत्र में कार्य कर रहे अनुसंधानकर्ताओं को इस पुस्तकालय से सीधा लाभ मिलेगा। वर्तमान में पुस्तकालय में वानिकी से सम्बधित लगभग 3300 किताबें, 700 पत्र–पत्रिकाएं, 120 नक्शें तथा 12 थीसिस उपलब्ध है तथा भविष्य में इस

पुस्तकालय को और अधिक विस्तार दिया जायेगा तथा वानिकी से सम्बधित ई–जर्नल्स भी उपलब्ध करवांए जायेंगें।

डॉ0 अश्वनी कुमार, भा0व0से0,महानिदेशक द्वारा नव–निर्मित पुस्तकालय भवन का लोकार्पण

अपराहन में महानिदेशक महोदय ने पॉटर हिल, शिमला में संस्थान द्वारा हिमाचल प्रदेश वन विभाग के सहयोग से स्थापित किय गए पश्चिमी हिमालय समशीतोषण वनस्पति वाटिका (Western Himalayan Temperate Arboratum) का भ्रमण किया और वहां उगाई गई विभिन्न बहुमूल्य वानिकी प्रजातियों के सन्दर्भ में जानकारी प्राप्त की।

डॉ0 अश्वनी कुमार, भा0व0से0,महानिदेशक द्वारा पश्चिमी हिमालय समशीतोषण वनस्पति वाटिका के निरिक्षण की कुछ एक झलकियॉ

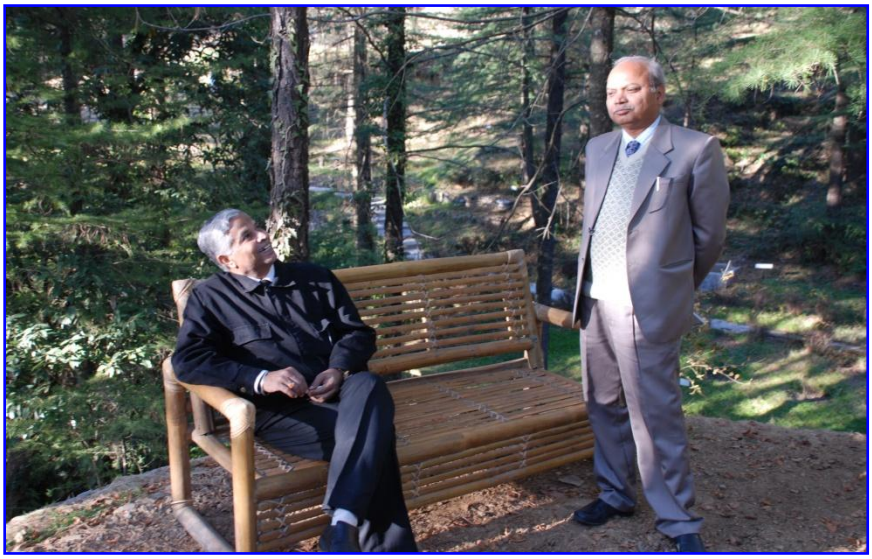

महानिदेशक महोदय की हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के कर्मचारियों के साथ एक भेंट

मीडिया कवरेज

धन की नहीं आने दी जाएगी कमी

शिक्षा परिषद के महानिदेशक ने दौरे के दौरान की कार्यों की प्रशंसा

भास्कर न्यूज | शिमला

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के महानिदेशक डॉ. अश्वनी कुमार अपने प्रदेश दौरे पर हैं। उपरोक्त यात्रा के दौरान, डॉ अश्वनी कुमार, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान तथा हिमाचल प्रदेश,जम्मू और कश्मीर राज्यों में वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों का अवलोकन किया। डॉ. अश्वनी कुमार ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस संस्थान द्वारा जनहित में शुरू की गई वानिकी अनुसंधान परियोजनाओं के संचालन में धन की कमी नहीं आने दी जाएगी तथा परिषद द्वारा समय-समय पर बजट उपलब्ध करवाया जाएगा।

अनुसंधान केंद्र में उद्घाटन करते हुए महानिदेशक डॉ. अश्वनी कुमार।

शैक्षणिक नहीं जनहित में बने परियोजनाएं

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान में बोले महानिदेशक डॉ. अश्विनी कुमार

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान में भविष्य में जो भी अनुसंधान परियोजनाएं बनाई जाए वे केवल अपने शैक्षणिक महत्व की न हो बल्कि अनुसंधान परियोजनाएं जन-आकांक्षाओं को ध्यान में रख कर में बनाई जानी चाहिए ताकि वानिकी अनुसंधान के परिणामों से आम-जनता तथा हित धारकों को इसका लाभ मिल सके।

यह बात डॉ. अश्वनी कुमार, महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषदने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला में उपस्थितों को संबोधित करते हुए कही। डॉ. अश्विनी यहां चल रहे कार्यों का अवलोकन करने पहुंचे थे। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला परिषद् का एक क्षेत्रीय संस्थान है तथा हिमाचल प्रदेश और जम्मू और कश्मीर राज्यों में वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य कर रहा है।

शिमला। महानिदेशक ने संस्थान के पुस्तकालय भवन का लोकार्पण किया तथा इसके लाभों के बारे में भी बताया।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. वीपी तिवारी ने अश्वनी कुमार का स्वागत किया तथा संस्थान में चल रही विभिन्न गतिविधियों से अवगत करवाया। डॉ. तिवारी ने बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान शिमला परिषद् का एक छोटा संस्थान है, परंतु फिर भी यह संस्थान हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू एवं कश्मीर राज्यों में सीमित संसाधनों के बावजूद वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। अपने संबोधन में डॉ. अश्वनी कुमार ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि संस्थान द्वारा जनहित/हितधारकों के हित में शुरू की गई वानिकी अनुसंधान परियोजनाओं के संचालन में धन की कमी नहीं आने दी जाएगी तथा परिषद् द्वारा समय-समय पर आवश्यक बजट उपलब्ध करवाया जाएगा। डॉ. अश्वनी कुमार ने कहा कि वर्तमान समय में लोगों को ऐसे कार्य चाहिए जिन से उन्हें तुरंत लाभ मिलना आरंभ हो, हालांकि वानिकी के क्षेत्र में ऐसा सदैव ही संभव नहीं है, परंतु फिर भी इस दिशा में हम एक नई शुरुआत कर सकते है। इस बाबत उन्होंने बताया कि औषधीय पौधों की खेती करने हेतु हमारे वैज्ञानिक विभिन्न तकनीकों का आविष्कार कर रहे हैं जिससे किसानों की आय में भी बढ़ोतरी हो रही है तथा दूसरी ओर पर्यावरण का संरक्षण भी संभव हो रहा है। उन्होंने सुझाव दिया कि अनुसंधानों के परिणामों को हितधारकों तक पहुंचाने हेतु परिषद् नें उपभोक्ताओं के लिए प्रत्यक्ष योजना तथा वन-विज्ञान केंद्रों को देश के विभिन्न भागों में स्थापित किया है जिसके माध्यम से परिषद द्वारा वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों से हितधारकों को अवगत करवाया जा रहा है तथा इसके साथ-साथ विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन भी परिषद् तथा इसके संस्थानों द्वारा समय-समय पर करवाया जाता है।

इसके बाद डॉ. अश्वनी कुमार नें संस्थान के नव-निर्मित पुस्तकालय भवन का लोकार्पण भी किया। वर्तमान में पुस्तकालय में वानिकी से संबंधित लगभग 3300 किताबें, 700 पत्र-पत्रिकाएं, 120 नकशें तथा 12 थीसिस उपलब्ध हैं तथा भविष्य में इस पुस्तकालय को और अधिक विस्तार दिया जायेगा तथा वानिकी से संबंधित ई-जर्नल्स भी उपलब्ध करवाएं जाएंगे।

भोजपत्र, चिलगोजा सहित बुरांस पर भी अनुसंधान करें वैज्ञानिक

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान में बोले भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के महानिदेशक

शिमला, 12 जनवरी (तिलक): भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के महानिदेशक डा. अश्विनी कुमार ने अपने हिमाचल प्रदेश के दौरे के दौरान सोमवार को हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला में चल रहे कार्यों का अवलोकन किया। इस दौरान संस्थान के निदेशक डा. वी.पी. तिवारी ने अश्विनी कुमार का स्वागत किया तथा संस्थान में चल रही विभिन्न गतिविधियों से अवगत करवाया। अपने संबोधन में डा. अश्विनी कुमार नें हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस संस्थान द्वारा हितधारकों विशेषकर दोनों राज्यों के वन विभागों के साथ अच्छा सामंजस्य बिठाकर महत्वपूर्ण अनुसंधान परियोजनाएं चलाई जा रही हैं। उन्होंने आश्वस्त किया कि संस्थान द्वारा जनहित/हितधारकों के हित में शुरू की गई वानिकी अनुसंधान परियोजनाओं के संचालन में धन की कमी नहीं आने दी जाएगी तथा परिषद द्वारा समय-समय पर आवश्यक बजट उपलब्ध करवाया जाएगा। डा. अश्विनी कुमार ने संस्थान के वैज्ञानिकों को सुझाव दिया कि भविष्य में जो भी अनुसंधान परियोजनाएं बनाई जाएं वे केवल अपने शैक्षणिक महत्व की न हों बल्कि अनुसंधान परियोजनाएं जन आकांक्षाओं को ध्यान में रखकर बनाई जानी चाहिएं ताकि वानिकी अनुसंधान के परिणामों से आम जनता तथा हितधारकों को इसका लाभ मिल सके। उन्होंने संस्थान के वैज्ञानिकों को मिकोरहिज्जा, बुरांस, वालनट, रोबिनिया, चिलगोजा, एसर व भोजपत्र आदि प्रजातियों पर भी अनुसंधान कार्य करने कि सलाह दी। उन्होंने संस्थान के हेर्बेरियम (सूखी वनस्पतियों का संग्रह), प्रयोगशालाओं का अवलोकन कर वज्ञानिकों से उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों कि विस्तृत जानकारी प्राप्त की। इससे पहले डा. तिवारी ने बताया की हालांकि हिमालयन वन अनुसंधान शिमला परिषद का एक छोटा संस्थान है परंतु फिर भी यह संस्थान हिमाचल तथा जम्मू-कश्मीर राज्यों में सीमित संसाधनों के बावजूद वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

पुस्तकालय का किया लोकार्पण

इसके बाद डा. अश्विनी कुमार ने संस्थान द्वारा नवनिर्मित पुस्तकालय भवन का लोकार्पण भी किया। उन्होंने कहा कि संस्थान के वैज्ञानिक तथा आसपास के क्षेत्रों से वानिकी के क्षेत्र में कार्य कर रहे अनुसंधानकर्त्ताओं को इस पुस्तकालय से सीधा लाभ मिलेगा। वर्तमान में पुस्तकालय में वानिकी से संबंधित लगभग 3300 किताबें, 700 पत्र-पत्रिकाएं, 120 नक्शे तथा 12 थीसिस उपलब्ध हैं तथा भविष्य में इस पुस्तकालय को और अधिक विस्तार दिया जाएगा।